इमाम हसन असकरी (अ०) और मसाएब

बिन्ते ज़हरा नक़वी नदल हिन्दी साहेबा

हर ज़माने में अल्लाह के नूर को मिटाने की कोशिश की गई लेकिन परवरदिगारे आलम ने अपने नूर को बाक़ी रखा ताकि लोग इससे फायदा उठा सकें।

यही वजह है कि ज़ालिम का ज़ुल्म व सितम दिन बदिन बढ़ता रहा। मासूम इमाम (अ0) की ज़िन्दगियाँ भी हमेशा वक़्त के हाकिमों की तरफ से मुसीबतों और ज़ुल्मों का निशाना बनी रहीं। और शायद ही कोई ऐसा हाकिम रहा हो जिसने अपनी हुकूमत का मक़सद आले मुहम्मद (अ0) पर ज़ुल्म व सितम को न क़रार दिया हो।

लेकिन इमाम हसन असकरी (अ0) की ज़िन्दगी एक अजीबो ग़रीब मुसीबत का निशाना रही जिसकी मिसाल दूसरे मासूमीन की ज़िन्दगियों में भी नहीं मिलती है। और इसका सबसे बड़ा राज़ यह है कि आलमे इस्लाम ने पैग़म्बर के ज़माने में यह बात सुन रखी थी कि मेरा बारहवाँ वारिस परवरदिगार की हुज्जत होगा जो ज़ुल्म व सितम से भरी हुई दुनिया को बराबरी और इन्साफ़ से भर देगा और दुनिया के हर ज़ुल्म के निज़ाम का तख़्ता पलट देगा। इस बुनयाद पर वक़्त के हाकिम इस बात की तरफ ध्यान देते रहे कि वह ज़माने का महदी (अ0) सबके सामने न आने पाए। इमाम हसन असकरी (अ0) के ज़माने तक यह सुकून था कि महदी (अ0) हुसैन (अ0) की औलाद का नवाँ होगा और अभी हुसैन (अ0) की औलाद के आठ लोग पूरे नहीं हुए हैं लेकिन इमाम असकरी (अ0) का ज़माना आने तक हर जानने वाले को यह अन्दाज़ा हो गया कि अब महदी के आने का ज़माना क़रीब आ गया है और वह उन्हीं की औलाद में होगा। चुनाँनचे आप (अ0) की ख़ास निगरानी शुरु हो गई और आपके घर वालों के साथ वही सुलूक किया गया जो फ़िरऔन ने बनी इस्राईल के साथ किया था।

इस्लाम की तारीख़ गवाह है कि ज़माने के हाकिमों का सुलूक मासूम इमामों (अ0) के बारे में बहुत सख़्त था। मौलाए काएनात (अ0) की शहादत से लेकर कर्बला के वाक़ेए तक आले मुहम्मद (अ0) पर नाज़िल होने वाली कौन सी मुसीबत है जिसमें बनी उमैय्या का हाथ न रहा हो। और जिनके ख़ून से किसी न किसी उमवी हाकिम के हाथ रंगीन न हों। लेकिन इन तमाम ज़ुल्मों के साथ–साथ बनी अब्बास के ज़ुल्मों का नक़शा इन अलफाज़ में खीचा गया है:

"ख़ुदा की क़सम! बनी उमैय्या के ज़ुल्म बनी अब्बास के ज़ुल्मों के मुक़ाबले में उसका दसवां हिस्सा भी नही हैं।" कि जिस अब्बासी हाकिम ने हुकूमत की कुर्सी पर क़दम रखा उसका पहला काम यह था कि औलादे रसूल (अ0) को सताया जाए और उनका नाम व निशान तक मिटा दिया जाए, कि जिसका अन्दाज़ा इन हालात से लगाया जा सकता है कि हारून का इमाम मूसा काज़िम (अ0) को बराबर क़ैदख़ाने में रखना और क़ैद व बन्द की हालत में शहीद करा देना, मामून का इमाम रज़ा को वली अहद बनाना फिर शहीद करा देना। इमाम मुहम्मद तक़ी को दामाद बनाना और फिर सितम का निशाना बनाकर मुअ्तसिम का आपको ज़हर दिला देना, मुतवक्किल

का इमाम हुसैन (अ0) की क़ब्र की बर्बादी का सामान करना और इस तरह के बेशुमार जुल्म हैं जो मासूम इमामों (अ0) के सामने आते रहे हैं और बनी अब्बास के नमकहराम हाकिम जिसके नाम पर हुकूमत में आए थे उसी घराने को बेनाम व निशान बनाने पर तुले रहे हैं।

इमाम हसन असकरी को इन मुसीबतों में से एक नया हिस्सा मिला था कि ज़ालिमों को मालूम था कि पैग़म्बरे इस्लाम का बारहवाँ वारिस जुल्म की बिसात को उलट देगा और उसके आने के बाद जुल्म व सितम का ख़ात्मा हो जाएगा और यह भी मालूम था कि उनकी नस्ल के ग्यारहवें वारिस हैं इसलिए जुल्मों का पूरा रुख़ आपकी मुबारक ज़ात की तरफ था और हर एक आपकी ज़िन्दगी को ख़त्म करने पर तुला हुआ था।

चुनानचे ज़ालिमों ने क़त्ल करने के बजाए तकलीफं देने का रास्ता चुना मगर कुदरत की नज़र में ख़ुदा के वलियों के सब्र के जौहर खुलने का यह बेहतरीन रास्ता है। जुल्म अपनी हद से गुज़र गये। कै़द व बन्द, ख़ाना नशीनी, नज़रबन्दी और इस तरह के सख़्त हालात का सामना करना पड़ा कि जिस महल में ज़ालिम आराम करें उसके एक हिस्से में इमाम को कै़दी बनाकर रखा गया कि यह आले रसलू (अ0) के साथ उम्मत की नज़र में बेहतरीन सुलूक था।

आपके कै़दख़ाने के ज़माने का एक वाके़आ यह मिलता है कि जब आप (इमाम हसन असकरी अ0) कै़द कर लिये गये तो बनी अब्बास और उसके साथ के लोगों में से सालेह बिन अली वग़ैरा सालेह बिन वसीफ़ के पास पहुँचे और उससे कहा किः हज़रत अबुमुहम्मद अलैहिस्सलाम के साथ ज़रा भी नम्री न करना, बल्कि और सख़्ती बढ़ा दो।

सालेह बिन वसीफ ने कहा, जहाँ तक हो सका मैंने दो शरीर व ज़ालिम लोग उन पर लगाए मगर वह दोनो ही आपकी नमाज़ और इबादत को देखकर मुतास्सिर हो गये।

इसके बाद उसने उन दोनों मुहाफिज़ों को बुलवाया। उनसे पूछा, बताओ तुम दोनों की उस मर्द (इमाम हसन असकरी अ0) के बारे में क्या राय है?

उन्होंने कहा, हम ऐसे शख़्स के बारे में क्या कहें जो दिन भर रोज़े से रहते हैं और रात भर इबादत के सिवा न किसी से कोई बात करते हैं और न किसी और काम में लगते हैं। वह अगर कभी नज़र उठाकर हम लोगों की तरफ देखते हैं तो हमारा रोयाँ–रोयाँ काँपने लगता है और दिल इस तरह घबराने लगता है कि अपने क़ाबू से बाहर हो जाता है।

अब्बासियों ने जब यह सुना तो वहाँ से मायूस वापस हो गये। ख़लीफा की परेशानी बढ़ गई और वह आपको मिटाने की फ़िक्र में लग गया। यहाँ तक मुअ्तमद ने आपको ज़हर दिलवा दिया। और इस तरह 8 रबीउल अव्वल 260 हि0 में इमामत का ग्यारहवां चाँद गहन में आ गया और हमेशा के लिए अपने बेटे क़ाएमे आले मुहम्मद से रुख़सत हो गये।

रिवायत के हिसाब से आपके जनाज़े की नमाज़ आपके भाई जाफ़र बिन इमाम अली नक़ी (अ0) ने जब पढ़ाने के लिए तकबीर का इरादा किया वेसे ही एक कमसिन लड़के सामने आए और फरमायाः चचाजान मैं अपने बुजुर्ग बाप की नमाज़ जनाज़ा पढ़ाने का हक़दार हूँ। यहाँ तक कि आपने खड़े होकर नमाज़ जनाज़ा पढ़ाई और आप (अ0) के बुजुर्ग बाप के पास ही आपको दफ़्न कर दिया गया।